eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा और समकालीन लोकतंत्र

डा0 आभा पाण्डेय[1]
[1]राजनीति विज्ञान विभाग, डी0जी0 कालेज कानपुर, उ0प्र0

Received: 15 May 2024 Accepted & Reviewed: 25 May 2024, Published: 31 May 2024

Abstract

प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध कृति द रिपबलिक में आदर्श राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की है, जो न्याय, नैतिकता, शिक्षा और दार्शनिक शासन पर आधारित थी। प्लेटो का आदर्श राज्य एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था का प्रतिपादन करता है जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग को उसकी योग्यता एवं प्रकृति के अनुसार कार्य प्रदान किया जाता है। प्लेटो ने राज्य को तीन वर्गों दार्शनिक शासक, सैनिक वर्ग तथा उत्पादक वर्गकृमें विभाजित करते हुए न्याय को प्रत्येक वर्ग द्वारा अपने कर्तव्य के समुचित निर्वहन से जोड़ा। प्लेटो का मानना था कि राज्य का संचालन दार्शनिक–राजाओं द्वारा होना चाहिए क्योंकि वे ज्ञान, विवेक एवं सत्य के सर्वोच्च स्वरूप को समझने में सक्षम होते हैं। समकालीन लोकतंत्र समानता, स्वतंत्रता, जनसहभागिता, मानवाधिकार तथा प्रतिनिधित्व जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ सार्वभौमिक मताधिकार, संवैधानिक शासन, शक्तियों के विभाजन तथा विधि के शासन को महत्व देती हैं। इस संदर्भ में प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा और आधुनिक लोकतंत्र के बीच गहन तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। प्लेटो लोकतंत्र की आलोचना करते हुए उसे भीड़तंत्र तथा अयोग्य नेतृत्व को जन्म देने वाली व्यवस्था मानते थे, जबकि आधुनिक लोकतंत्र नागरिक स्वतंत्रताओं और जनसत्ता को सर्वोपरि मानता है। यह शोधपत्र प्लेटो के आदर्श राज्य की मूल अवधारणाओं का विश्लेषण करते हुए समकालीन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के साथ उसकी प्रासंगिकता, समानताओं, विरोधाभासों तथा सीमाओं का आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि यद्यपि प्लेटो की अवधारणा पूर्णतः आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों से मेल नहीं खाती, फिर भी नैतिक नेतृत्व, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुशासन तथा सामाजिक न्याय जैसे तत्व आज भी लोकतांत्रिक शासन की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। शोधपत्र यह भी प्रतिपादित करता है कि प्लेटो की विचारधारा आधुनिक राजनीतिक चिंतन की आधारशिला रही है तथा समकालीन लोकतंत्र को समझने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका बनी हुई है।

मुख्य शब्द– प्लेटो, आदर्श राज्य, लोकतंत्र, दार्शनिक राजा, न्याय, समकालीन राजनीति, राजनीतिक दर्शन, सुशासन

Introduction

राजनीतिक दर्शन के इतिहास में प्लेटो का नाम अत्यंत सम्मान एवं गंभीरता के साथ लिया जाता है। प्लेटो ने न केवल पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन की आधारशिला रखी, बल्कि राज्य, न्याय, शासन, शिक्षा एवं नैतिकता के संबंध में ऐसे सिद्धांत प्रस्तुत किए जिनका प्रभाव आज भी विश्व राजनीति एवं राजनीतिक दर्शन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनकी महान कृति द रिपबलिक राजनीतिक दर्शन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचनाओं में मानी जाती है, जिसमें उन्होंने आदर्श राज्य की विस्तृत अवधारणा प्रस्तुत की। प्लेटो का आदर्श राज्य केवल एक राजनीतिक संरचना नहीं है, बल्कि वह एक नैतिक एवं दार्शनिक व्यवस्था है

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

जिसका उद्देश्य मानव जीवन में न्याय, सदाचार और सामूहिक कल्याण की स्थापना करना है। प्लेटो का राजनीतिक चिंतन उस समय की यूनानी राजनीतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित था। प्राचीन यूनान विशेषकर एथेंस में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था प्रचलित थी, किंतु उस व्यवस्था में राजनीतिक अस्थिरता, सत्ता संघर्ष, जनमत की अस्थिरता तथा नैतिक पतन जैसी समस्याएँ व्याप्त थीं। प्लेटो के गुरु सुकरात को एथेंस की लोकतांत्रिक व्यवस्था द्वारा मृत्युदंड दिया जाना प्लेटो के जीवन की एक अत्यंत निर्णायक घटना थी। इस घटना ने प्लेटो को लोकतंत्र की सीमाओं एवं दोषों पर गंभीर चिंतन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अनुभव किया कि यदि शासन अज्ञान एवं भावनात्मक निर्णय लेने वाली भीड़ के हाथों में होगा तो राज्य में न्याय एवं स्थिरता स्थापित नहीं हो सकती। इसी कारण प्लेटो ने ऐसे आदर्श राज्य की कल्पना की जिसमें शासन की बागडोर दार्शनिक एवं ज्ञानवान व्यक्तियों के हाथों में हो। प्लेटो के अनुसार राज्य का उद्देश्य केवल कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना नहीं है, बल्कि नागरिकों के नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने न्याय को राज्य का सर्वोच्च गुण माना तथा यह प्रतिपादित किया कि जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वाभाविक एवं निर्धारित कार्य का ईमानदारी से पालन करता है, तभी वास्तविक न्याय स्थापित होता है। प्लेटो ने समाज को तीन वर्गोंकृदार्शनिक शासक, सैनिक वर्ग तथा उत्पादक वर्गकृमें विभाजित किया और प्रत्येक वर्ग के लिए विशिष्ट कर्तव्यों का निर्धारण किया। उनके अनुसार दार्शनिक राजा ही राज्य को सही दिशा प्रदान कर सकता है क्योंकि वह सत्य, ज्ञान एवं न्याय के वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम होता है।

समकालीन युग में लोकतंत्र विश्व की सर्वाधिक स्वीकृत एवं प्रभावशाली शासन प्रणाली के रूप में स्थापित हो चुका है। आधुनिक लोकतंत्र जनसत्ता, समानता, स्वतंत्रता, मानवाधिकार एवं विधि के शासन जैसे मूल सिद्धांतों पर आधारित है। आज अधिकांश राष्ट्र लोकतांत्रिक मूल्यों एवं संवैधानिक व्यवस्थाओं को अपनाकर शासन संचालन कर रहे हैं। लोकतंत्र नागरिकों को राजनीतिक सहभागिता का अधिकार प्रदान करता है तथा सरकार को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाता है। स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र मीडिया, बहुदलीय प्रणाली तथा मौलिक अधिकार आधुनिक लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं। यद्यपि प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे, फिर भी उनके अनेक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। वर्तमान समय में राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, अवसरवाद, जनमत का दुरुपयोग तथा अयोग्य नेतृत्व जैसी समस्याएँ लोकतंत्र की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न उत्पन्न कर रही हैं। ऐसे में प्लेटो का नैतिक नेतृत्व, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुशासन तथा उत्तरदायी शासन संबंधी चिंतन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकता है। दूसरी ओर प्लेटो की कुछ अवधारणाएँ जैसे अभिजनवादी शासन, सीमित स्वतंत्रता तथा कठोर वर्ग विभाजनकृ आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ पूर्णतः सामंजस्य स्थापित नहीं कर पातीं।

इस संदर्भ में प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा एवं समकालीन लोकतंत्र के मध्य तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह अध्ययन न केवल प्राचीन एवं आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि राजनीतिक दर्शन समय के साथ किस प्रकार विकसित हुआ है। प्लेटो के विचार आधुनिक लोकतंत्र की शक्तियों एवं कमजोरियों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके चिंतन के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि राज्य को नैतिकता, शिक्षा एवं न्याय पर भी आधारित होना चाहिए। प्रस्तुत शोधपत्र में प्लेटो के आदर्श राज्य की मूल अवधारणाओं का विश्लेषण करते हुए समकालीन लोकतंत्र के साथ उसकी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

प्रासंगिकता, समानताओं, विरोधाभासों एवं सीमाओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। साथ ही यह शोधपत्र इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि प्लेटो का राजनीतिक दर्शन आज भी राजनीतिक विज्ञान एवं लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के अध्ययन में अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायी बना हुआ है।

प्लेटो ने अपने राजनीतिक दर्शन में आदर्श राज्य की ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जो न्याय, नैतिकता, ज्ञान तथा सामाजिक समन्वय पर आधारित थी। प्लेटो का आदर्श राज्य केवल एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं था, बल्कि वह मानव जीवन के नैतिक एवं बौद्धिक विकास की संपूर्ण योजना था। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति जेम त्मचनइसपब में आदर्श राज्य का विस्तृत वर्णन करते हुए यह प्रतिपादित किया कि राज्य का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि नागरिकों को सदाचारी एवं न्यायप्रिय बनाना भी है। प्लेटो का मानना था कि जिस प्रकार मानव शरीर एवं आत्मा के विभिन्न अंगों के मध्य संतुलन आवश्यक है, उसी प्रकार राज्य के विभिन्न वर्गों के मध्य सामंजस्य एवं संतुलन होना चाहिए। यही संतुलन न्याय की स्थापना करता है और राज्य को आदर्श बनाता है। प्लेटो के आदर्श राज्य की आधारशिला न्याय की अवधारणा है। उनके अनुसार न्याय का अर्थ केवल कानून का पालन करना नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने स्वाभाविक एवं निर्धारित कार्य का समुचित निर्वहन करना है। प्लेटो का विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति में अलग–अलग प्रकार की प्राकृतिक योग्यताएँ होती हैं, इसलिए सभी व्यक्तियों को समान कार्य नहीं सौंपे जा सकते। जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एवं प्रकृति के अनुरूप कार्य करता है और दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता, तब राज्य में न्याय स्थापित होता है। इस प्रकार न्याय प्लेटो के आदर्श राज्य का केंद्रीय तत्व है।

प्लेटो ने मानव आत्मा को तीन भागों बुद्धि, साहस एवं इच्छाओं में विभाजित किया। इसी आधार पर उन्होंने राज्य को भी तीन वर्गों में विभाजित किया। पहला वर्ग दार्शनिक शासकों का है, जिनमें बुद्धि का गुण प्रमुख होता है। दूसरा वर्ग सैनिकों अथवा रक्षकों का है, जिनमें साहस एवं वीरता का गुण होता है। तीसरा वर्ग उत्पादक वर्ग का है, जिसमें किसान, व्यापारी, कारीगर एवं अन्य श्रमिक सम्मिलित होते हैं। प्लेटो के अनुसार राज्य तभी आदर्श बन सकता है जब ये तीनों वर्ग अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करें तथा परस्पर सहयोग एवं संतुलन बनाए रखें। प्लेटो के आदर्श राज्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता दार्शनिक राजा की अवधारणा है। प्लेटो का मानना था कि राज्य का शासन केवल उन व्यक्तियों के हाथों में होना चाहिए जो ज्ञान, विवेक एवं नैतिकता से परिपूर्ण हों। उन्होंने प्रसिद्ध कथन दिया कि जब तक दार्शनिक राजा नहीं बनेंगे अथवा राजा दार्शनिक नहीं होंगे, तब तक संसार की समस्याएँ समाप्त नहीं होंगी। प्लेटो के अनुसार दार्शनिक व्यक्ति सत्य एवं न्याय के वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम होता है। वह व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राज्य एवं समाज के व्यापक हित में निर्णय लेता है। इसलिए शासन की जिम्मेदारी उन्हीं व्यक्तियों को दी जानी चाहिए जिनमें बौद्धिक श्रेष्ठता एवं नैतिक गुण विद्यमान हों। प्लेटो ने शिक्षा को आदर्श राज्य की आत्मा माना। उनका विश्वास था कि योग्य शासकों एवं आदर्श नागरिकों का निर्माण केवल उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने राज्य नियंत्रित शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया तथा शिक्षा को सभी वर्गों के लिए आवश्यक माना। प्लेटो की शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास करना भी था। उन्होंने संगीत, व्यायाम, गणित एवं दर्शन जैसे विषयों को विशेष महत्व दिया। प्लेटो के अनुसार शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सत्य, न्याय एवं सदाचार के महत्व को समझ सकता है। प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में शासक एवं सैनिक वर्ग के लिए निजी संपत्ति एवं निजी परिवार की व्यवस्था का विरोध किया। उनका मानना था कि निजी संपत्ति एवं पारिवारिक मोह शासकों को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

स्वार्थी बना सकते हैं, जिससे वे राज्य के हित की अपेक्षा अपने व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता देने लगेंगे। इसलिए उन्होंने सामूहिक जीवन की व्यवस्था का समर्थन किया जिसमें शासक एवं सैनिक वर्ग सामूहिक रूप से जीवन व्यतीत करें। इस व्यवस्था का उद्देश्य शासकों को भ्रष्टाचार एवं स्वार्थ से दूर रखना था। हालांकि यह साम्यवाद केवल उच्च वर्गों तक सीमित था, जबकि उत्पादक वर्ग को निजी संपत्ति रखने की अनुमति थी।

प्लेटो ने महिलाओं के संबंध में भी अपेक्षाकृत प्रगतिशील विचार प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि यदि महिलाओं में पुरुषों के समान योग्यता एवं क्षमता हो तो उन्हें भी शिक्षा एवं शासन में समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। उन्होंने महिलाओं को सैनिक एवं शासक वर्ग में स्थान देने का समर्थन किया। यह विचार उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में अत्यंत क्रांतिकारी माना जाता है। प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्ति की अपेक्षा राज्य को अधिक महत्व दिया गया है। उनके अनुसार व्यक्ति का अस्तित्व राज्य से अलग नहीं हो सकता। राज्य एक नैतिक संस्था है जिसका उद्देश्य नागरिकों के जीवन को श्रेष्ठ एवं व्यवस्थित बनाना है। इसलिए प्लेटो ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अपेक्षा सामाजिक अनुशासन एवं सामूहिक हित को अधिक महत्व दिया। उनका विश्वास था कि अत्यधिक स्वतंत्रता अराजकता एवं नैतिक पतन को जन्म देती है। इसी कारण उन्होंने नियंत्रित एवं अनुशासित समाज की कल्पना की। प्लेटो का आदर्श राज्य मूलतः अभिजनवादी व्यवस्था पर आधारित था। उन्होंने शासन का अधिकार केवल योग्य एवं शिक्षित व्यक्तियों तक सीमित रखा। वे लोकतंत्र के आलोचक थे क्योंकि उनके अनुसार लोकतंत्र में शासन अयोग्य एवं भावनात्मक निर्णय लेने वाली भीड़ के हाथों में चला जाता है। प्लेटो का मानना था कि शासन एक कला है और जिस प्रकार जहाज का संचालन प्रशिक्षित नाविक द्वारा किया जाना चाहिए, उसी प्रकार राज्य का संचालन भी ज्ञानवान एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा ही किया जाना चाहिए। प्लेटो की आदर्श राज्य की अवधारणा में नैतिकता एवं राजनीति का गहरा संबंध दिखाई देता है। उन्होंने राजनीति को नैतिकता से पृथक नहीं माना। उनके अनुसार राज्य का वास्तविक उद्देश्य केवल आर्थिक विकास अथवा शक्ति प्राप्त करना नहीं, बल्कि नागरिकों में सदाचार एवं नैतिकता का विकास करना है। प्लेटो का आदर्श राज्य इस विचार पर आधारित है कि जब शासन नैतिकता, ज्ञान एवं न्याय के सिद्धांतों पर आधारित होगा तभी समाज में स्थिरता, शांति एवं समृद्धि स्थापित हो सकेगी। यद्यपि प्लेटो की आदर्श राज्य की अवधारणा को अत्यधिक आदर्शवादी एवं अव्यावहारिक माना गया है, फिर भी उसका राजनीतिक दर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में शिक्षा, नैतिक नेतृत्व, सुशासन एवं सामाजिक न्याय जैसे अनेक विचार प्लेटो की अवधारणा से प्रभावित दिखाई देते हैं। प्लेटो का आदर्श राज्य आज भी राजनीतिक विज्ञान एवं राजनीतिक दर्शन के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है क्योंकि यह राज्य, शासन एवं न्याय की मूलभूत समस्याओं पर गहन चिंतन प्रस्तुत करता है।

प्लेटो के राजनीतिक दर्शन में दार्शनिक राजा की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं केंद्रीय स्थान रखती है। प्लेटो का मानना था कि राज्य की वास्तविक उन्नति तथा समाज में न्याय की स्थापना तभी संभव है जब शासन ऐसे व्यक्तियों के हाथों में हो जो ज्ञान, विवेक, नैतिकता एवं सत्य के प्रति समर्पित हों। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति में स्पष्ट रूप से कहा कि "जब तक दार्शनिक राजा नहीं बनेंगे अथवा राजा दार्शनिक नहीं होंगे, तब तक मानव समाज की समस्याओं का समाधान संभव नहीं है।" यह कथन प्लेटो की राजनीतिक विचारधारा का मूल आधार माना जाता है। प्लेटो के अनुसार शासन एक कला है और जिस प्रकार किसी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

जहाज का संचालन प्रशिक्षित नाविक द्वारा किया जाना चाहिए, उसी प्रकार राज्य का संचालन भी केवल योग्य एवं ज्ञानवान व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए। सामान्य जनता अथवा केवल लोकप्रियता प्राप्त व्यक्ति शासन संचालन के लिए पर्याप्त योग्य नहीं हो सकते क्योंकि शासन चलाने के लिए गहन ज्ञान, दूरदृष्टि एवं नैतिक विवेक की आवश्यकता होती है। प्लेटो का विश्वास था कि अधिकांश लोग अज्ञान, इच्छाओं एवं स्वार्थ से प्रेरित होते हैं, जबकि दार्शनिक व्यक्ति सत्य एवं न्याय के वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम होता है। इसलिए शासन का अधिकार उन्हीं व्यक्तियों को मिलना चाहिए जो बुद्धिमत्ता एवं नैतिकता में श्रेष्ठ हों।

प्लेटो के अनुसार दार्शनिक वह व्यक्ति है जो ज्ञान का प्रेमी हो तथा सत्य की खोज में निरंतर संलग्न रहे। दार्शनिक केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह जीवन, समाज एवं नैतिकता के गहरे सिद्धांतों को समझने का प्रयास करता है। प्लेटो का मानना था कि दार्शनिक व्यक्ति इंद्रिय सुखों एवं व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर व्यापक सामाजिक हित के बारे में सोचता है। उसमें आत्मसंयम, धैर्य, साहस एवं विवेक जैसे गुण विद्यमान होते हैं, जो उसे शासन के योग्य बनाते हैं। दार्शनिक राजा की अवधारणा प्लेटो की न्याय संबंधी धारणा से भी जुड़ी हुई है। प्लेटो के अनुसार न्याय तभी संभव है जब राज्य में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वाभाविक कर्तव्यों का पालन करे और शासन ऐसे व्यक्तियों के हाथों में हो जो समाज के समग्र हित को समझते हों। दार्शनिक राजा राज्य में न्याय एवं संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है। वह व्यक्तिगत लाभ अथवा सत्ता की लालसा से प्रेरित नहीं होता, बल्कि समाज के नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को अपना उद्देश्य मानता है। प्लेटो ने दार्शनिक राजा के निर्माण हेतु विस्तृत शिक्षा प्रणाली का भी वर्णन किया। उनके अनुसार योग्य शासक बनने के लिए व्यक्ति को दीर्घकालीन एवं कठोर शिक्षा एवं प्रशिक्षण से गुजरना चाहिए। प्रारंभिक अवस्था में शारीरिक प्रशिक्षण एवं संगीत शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि शरीर एवं मन का संतुलित विकास हो सके। इसके पश्चात गणित, ज्यामिति, खगोलशास्त्र एवं तर्कशास्त्र का अध्ययन कराया जाना चाहिए। अंततः दर्शनशास्त्र की शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को सत्य एवं न्याय के उच्चतम स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कराया जाना चाहिए। प्लेटो के अनुसार लगभग पचास वर्ष की आयु तक कठिन प्रशिक्षण एवं अनुभव प्राप्त करने के बाद ही कोई व्यक्ति शासन करने योग्य बनता है।

दार्शनिक राजा की अवधारणा में नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। प्लेटो का मानना था कि यदि शासक नैतिक एवं विवेकशील होगा तो राज्य में भ्रष्टाचार, अन्याय एवं शोषण की संभावना कम हो जाएगी। दार्शनिक राजा व्यक्तिगत संपत्ति एवं पारिवारिक मोह से मुक्त होकर केवल राज्य के कल्याण के लिए कार्य करता है। इसी कारण प्लेटो ने शासक वर्ग के लिए निजी संपत्ति एवं निजी परिवार की व्यवस्था का विरोध किया। उनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि शासक वर्ग स्वार्थ एवं लालच से दूर रहे। प्लेटो की दार्शनिक राजा की अवधारणा लोकतंत्र की उनकी आलोचना से भी संबंधित है। उन्होंने एथेंस की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनमत के दुरुपयोग, अयोग्य नेतृत्व एवं राजनीतिक अस्थिरता को देखा था। विशेष रूप से उनके गुरु को लोकतांत्रिक व्यवस्था द्वारा मृत्युदंड दिए जाने की घटना ने उन्हें लोकतंत्र के दोषों के प्रति अधिक आलोचनात्मक बना दिया। प्लेटो का विश्वास था कि लोकतंत्र में लोग भावनाओं एवं लोकप्रियता के आधार पर नेताओं का चयन करते हैं, जबकि शासन के लिए वास्तविक योग्यता एवं ज्ञान आवश्यक है। इसलिए उन्होंने लोकतंत्र की अपेक्षा दार्शनिकों के शासन को श्रेष्ठ माना। हालाँकि प्लेटो की दार्शनिक राजा की अवधारणा की अनेक आलोचनाएँ भी की गई हैं। आलोचकों का मत है कि यह अवधारणा अत्यधिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

आदर्शवादी एवं अव्यावहारिक है क्योंकि वास्तविक जीवन में पूर्णतः निष्पक्ष एवं नैतिक शासक प्राप्त करना कठिन है। इसके अतिरिक्त यह अवधारणा लोकतांत्रिक सिद्धांतों के विपरीत मानी जाती है क्योंकि इसमें शासन का अधिकार केवल एक विशेष वर्ग तक सीमित कर दिया गया है। आधुनिक लोकतंत्र समानता एवं जनसत्ता पर आधारित है, जबकि प्लेटो का दार्शनिक राजा अभिजनवादी शासन की ओर संकेत करता है।

Karl Popper जैसे विचारकों ने प्लेटो की आलोचना करते हुए कहा कि दार्शनिक राजा की अवधारणा निरंकुश शासन को जन्म दे सकती है क्योंकि इसमें शासक को अत्यधिक शक्ति प्रदान की जाती है। यदि शासक स्वयं को सर्वज्ञ एवं सर्वोच्च मानने लगे तो नागरिक स्वतंत्रताओं का दमन हो सकता है। इसी कारण आधुनिक राजनीतिक चिंतन में निरंकुश सत्ता की अपेक्षा संवैधानिक एवं उत्तरदायी शासन को अधिक महत्व दिया जाता है।

इसके बावजूद दार्शनिक राजा की अवधारणा आज भी प्रासंगिक मानी जाती है। आधुनिक लोकतंत्रों में भी नैतिक एवं शिक्षित नेतृत्व की आवश्यकता निरंतर अनुभव की जाती है। राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार, अवसरवाद एवं नैतिक पतन यह संकेत देते हैं कि शासन में केवल लोकप्रियता पर्याप्त नहीं है, बल्कि विवेक, नैतिकता एवं दूरदृष्टि भी आवश्यक है। प्लेटो की अवधारणा इस तथ्य को रेखांकित करती है कि शासन का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज में न्याय, नैतिकता एवं कल्याण की स्थापना करना होना चाहिए। इस प्रकार दार्शनिक राजा की अवधारणा प्लेटो के राजनीतिक दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली तत्व है। यह अवधारणा ज्ञान, नैतिकता एवं सुशासन के आदर्शों को प्रस्तुत करती है। यद्यपि आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्लेटो की इस अवधारणा को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जा सकता, फिर भी यह आज भी राजनीतिक नेतृत्व की गुणवत्ता एवं नैतिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक मानी जाती है।

समकालीन लोकतंत्र आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था की सबसे व्यापक एवं स्वीकार्य शासन प्रणाली है। वर्तमान युग में लोकतंत्र केवल शासन पद्धति तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक मूल्यों से जुड़ी एक व्यापक जीवन पद्धति के रूप में विकसित हो चुका है। लोकतंत्र का मूल आधार जनता की संप्रभुता है, अर्थात राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है। आधुनिक लोकतंत्र में सरकार जनता द्वारा चुनी जाती है तथा जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। लोकतंत्र की यह अवधारणा प्राचीन प्रत्यक्ष लोकतंत्र से भिन्न है क्योंकि आज अधिकांश देशों में प्रतिनिधिक लोकतंत्र की व्यवस्था प्रचलित है, जिसमें नागरिक अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करके शासन संचालन में भाग लेते हैं। समकालीन लोकतंत्र समानता, स्वतंत्रता, न्याय एवं मानवाधिकार जैसे सिद्धांतों पर आधारित है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। जाति, धर्म, भाषा, लिंग, रंग अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी व्यक्ति को राजनीतिक अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार आधुनिक लोकतंत्र की प्रमुख विशेषता है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार प्राप्त होता है। यह व्यवस्था राजनीतिक समानता की भावना को सुदृढ़ करती है।

समकालीन लोकतंत्र में विधि के शासन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि राज्य में कानून सर्वोच्च होता है और सभी व्यक्ति, चाहे वे शासक हों या सामान्य नागरिक, कानून के अधीन होते

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

हैं। लोकतंत्र में शासन संविधान के अनुसार संचालित होता है तथा संविधान नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करता है। स्वतंत्र न्यायपालिका लोकतंत्र की एक अनिवार्य विशेषता है क्योंकि यह नागरिक अधिकारों की सुरक्षा तथा शासन की शक्तियों पर नियंत्रण स्थापित करती है। आधुनिक लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता एवं संगठन बनाने की स्वतंत्रता को विशेष महत्व दिया जाता है। नागरिकों को अपनी राय व्यक्त करने, सरकार की आलोचना करने तथा शांतिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन करने का अधिकार प्राप्त होता है। स्वतंत्र मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है क्योंकि यह सरकार एवं जनता के मध्य संवाद स्थापित करने का कार्य करता है तथा शासन की गतिविधियों पर निगरानी रखता है। इसी प्रकार नागरिक समाज संगठन एवं गैर–सरकारी संस्थाएँ लोकतांत्रिक व्यवस्था को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

समकालीन लोकतंत्र की एक प्रमुख विशेषता शक्तियों का विभाजन है। शासन की शक्तियों को विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के मध्य विभाजित किया जाता है ताकि किसी एक संस्था में अत्यधिक शक्ति केंद्रित न हो सके। यह व्यवस्था निरंकुशता की संभावना को कम करती है तथा लोकतांत्रिक संतुलन बनाए रखती है। इसके अतिरिक्त बहुदलीय व्यवस्था आधुनिक लोकतंत्र की आत्मा मानी जाती है। विभिन्न राजनीतिक दल जनता के समक्ष नीतियाँ एवं कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं तथा चुनाव के माध्यम से सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इससे राजनीतिक प्रतिस्पर्धा एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। समकालीन लोकतंत्र केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक न्याय को भी महत्व देता है। आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अपनाते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाएँ प्रदान करने का प्रयास करते हैं। लोकतंत्र का उद्देश्य केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार एवं सामाजिक समानता की स्थापना भी है। इसी कारण आधुनिक लोकतंत्र में सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता एवं अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा पर विशेष बल दिया जाता है।

वैश्वीकरण एवं तकनीकी क्रांति के युग में समकालीन लोकतंत्र का स्वरूप और अधिक जटिल एवं गतिशील हो गया है। इंटरनेट एवं सोशल मीडिया ने राजनीतिक संवाद एवं जनमत निर्माण की प्रक्रिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज नागरिक डिजिटल माध्यमों के द्वारा शासन से सीधे संवाद स्थापित कर सकते हैं। ई–गवर्नेंस एवं डिजिटल लोकतंत्र जैसी अवधारणाएँ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाने का प्रयास कर रही हैं। हालांकि सोशल मीडिया के माध्यम से फेक न्यूज़, दुष्प्रचार एवं जनमत के दुरुपयोग जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जो लोकतंत्र की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। समकालीन लोकतंत्र अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजनीतिक भ्रष्टाचार, धनबल एवं बाहुबल का प्रभाव, जातीय एवं धार्मिक ध्रुवीकरण, जनमत का दुरुपयोग, आर्थिक असमानता तथा राजनीतिक उदासीनता जैसी समस्याएँ लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करती हैं। कई देशों में लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वतंत्रता पर भी प्रश्न उठ रहे हैं। इसके बावजूद लोकतंत्र आज भी सबसे प्रभावी एवं मानवीय शासन प्रणाली मानी जाती है क्योंकि यह नागरिकों को स्वतंत्रता, सहभागिता एवं अधिकार प्रदान करती है। आधुनिक लोकतंत्र का वास्तविक उद्देश्य केवल सरकार का गठन करना नहीं, बल्कि ऐसी राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मान, स्वतंत्रता एवं समान अवसरों के साथ जीवन व्यतीत कर सके। समकालीन लोकतंत्र निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है जो समय, समाज एवं परिस्थितियों के अनुसार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

स्वयं को विकसित करती रहती है। यही कारण है कि लोकतंत्र आज केवल शासन प्रणाली न होकर मानव गरिमा, सामाजिक न्याय एवं सामूहिक उत्तरदायित्व का प्रतीक बन चुका है।

प्लेटो के आदर्श राज्य और समकालीन लोकतंत्र का तुलनात्मक अध्ययन– प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा और समकालीन लोकतंत्र दोनों ही राजनीतिक दर्शन एवं शासन व्यवस्था के महत्वपूर्ण प्रतिमान हैं, किंतु दोनों की मूल धारणाओं, उद्देश्यों एवं कार्यप्रणालियों में व्यापक अंतर दिखाई देता है। प्लेटो का आदर्श राज्य न्याय, नैतिकता एवं ज्ञान आधारित शासन पर आधारित था, जबकि समकालीन लोकतंत्र जनसत्ता, समानता, स्वतंत्रता एवं नागरिक अधिकारों पर आधारित व्यवस्था है। दोनों व्यवस्थाओं का उद्देश्य समाज में व्यवस्था एवं कल्याण स्थापित करना है, किंतु इन उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन एवं सिद्धांत अलग–अलग हैं। इसलिए इन दोनों व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन राजनीतिक चिंतन के विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

प्लेटो का आदर्श राज्य मूलतः अभिजनवादी व्यवस्था थी जिसमें शासन का अधिकार केवल योग्य एवं दार्शनिक व्यक्तियों को प्रदान किया गया था। प्लेटो का मानना था कि सामान्य जनता शासन संचालन के लिए पर्याप्त योग्य नहीं होती क्योंकि अधिकांश लोग भावनाओं, इच्छाओं एवं व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रभावित होते हैं। उन्होंने शासन की तुलना एक जहाज से करते हुए कहा कि जिस प्रकार जहाज का संचालन प्रशिक्षित नाविक द्वारा किया जाना चाहिए, उसी प्रकार राज्य का संचालन भी ज्ञानवान एवं विवेकशील व्यक्तियों द्वारा ही किया जाना चाहिए। इसके विपरीत समकालीन लोकतंत्र जनता की संप्रभुता पर आधारित है। लोकतंत्र में शासन की शक्ति जनता में निहित होती है तथा नागरिक अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करके शासन संचालन में भाग लेते हैं। आधुनिक लोकतंत्र प्रत्येक नागरिक को राजनीतिक समानता एवं मतदान का अधिकार प्रदान करता है।

प्लेटो के आदर्श राज्य की आधारशिला न्याय की अवधारणा थी। उनके अनुसार न्याय का अर्थ यह था कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वाभाविक एवं निर्धारित कार्य का समुचित निर्वहन करे तथा दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करे। प्लेटो ने समाज को दार्शनिक शासक, सैनिक वर्ग एवं उत्पादक वर्ग में विभाजित किया तथा प्रत्येक वर्ग के लिए विशिष्ट कर्तव्यों का निर्धारण किया। इसके विपरीत समकालीन लोकतंत्र में न्याय का आधार व्यक्तिगत अधिकारों, समान अवसरों एवं विधि के शासन पर आधारित है। आधुनिक लोकतंत्र व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों को विशेष महत्व देता है। लोकतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को समान कानूनी संरक्षण एवं सामाजिक न्याय प्राप्त करने का अधिकार होता है।

दोनों व्यवस्थाओं में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, किंतु दोनों की दृष्टि में अंतर दिखाई देता है। प्लेटो ने शिक्षा को आदर्श राज्य की आत्मा माना तथा उसका उद्देश्य नैतिक एवं दार्शनिक शासकों का निर्माण करना बताया। उन्होंने राज्य नियंत्रित शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया और शिक्षा को चरित्र निर्माण एवं अनुशासन से जोड़ा। समकालीन लोकतंत्र भी शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है, किंतु उसका उद्देश्य नागरिकों को जागरूक, स्वतंत्र एवं उत्तरदायी बनाना है। आधुनिक लोकतांत्रिक शिक्षा व्यवस्था में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक मूल्य एवं मानवाधिकारों पर विशेष बल दिया जाता है। प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित महत्व दिया गया था। उन्होंने राज्य को व्यक्ति से ऊपर माना तथा सामाजिक अनुशासन एवं सामूहिक हित को प्राथमिकता दी। प्लेटो का विश्वास था कि अत्यधिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

स्वतंत्रता अराजकता एवं नैतिक पतन को जन्म देती है। इसलिए उन्होंने नियंत्रित एवं अनुशासित समाज की कल्पना की। इसके विपरीत समकालीन लोकतंत्र व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लोकतंत्र की आत्मा मानता है। आधुनिक लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विचारों की स्वतंत्रता, संगठन बनाने की स्वतंत्रता तथा धार्मिक स्वतंत्रता जैसे अधिकारों को संवैधानिक संरक्षण प्राप्त होता है। प्लेटो का आदर्श राज्य वर्ग आधारित व्यवस्था पर आधारित था। उन्होंने समाज को स्थायी वर्गों में विभाजित किया तथा प्रत्येक वर्ग के लिए निश्चित भूमिकाएँ निर्धारित कीं। यद्यपि प्लेटो ने योग्यता के आधार पर वर्ग परिवर्तन की संभावना को स्वीकार किया, फिर भी उनकी व्यवस्था पूर्ण समानता पर आधारित नहीं थी। दूसरी ओर समकालीन लोकतंत्र सामाजिक एवं राजनीतिक समानता पर आधारित है। लोकतंत्र में सभी नागरिक कानून की दृष्टि में समान माने जाते हैं तथा किसी भी व्यक्ति को जन्म, जाति, धर्म, लिंग अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर भेदभाव का सामना नहीं करना चाहिए।

प्लेटो ने दार्शनिक राजा की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए शासन में नैतिकता एवं ज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया। उनके अनुसार शासक वह होना चाहिए जो सत्य, न्याय एवं समाज के कल्याण के प्रति समर्पित हो। समकालीन लोकतंत्र भी नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता को स्वीकार करता है, किंतु वह किसी एक विशेष वर्ग को शासन का अधिकार नहीं देता। लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है और यदि शासक जनता की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते तो उन्हें सत्ता से हटाया जा सकता है। इस प्रकार लोकतंत्र में उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही की व्यवस्था अधिक विकसित होती है।

प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे। उन्होंने एथेंस की लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक अस्थिरता, अयोग्य नेतृत्व एवं जनमत के दुरुपयोग को देखा था। उनके अनुसार लोकतंत्र में लोग लोकप्रियता एवं भावनाओं के आधार पर नेताओं का चयन करते हैं, जिससे शासन की गुणवत्ता कमजोर हो जाती है। प्लेटो का विश्वास था कि लोकतंत्र अंततः भीड़तंत्र एवं तानाशाही को जन्म देता है। समकालीन लोकतंत्र इन आलोचनाओं को स्वीकार करते हुए भी यह मानता है कि जनता की सहभागिता एवं राजनीतिक स्वतंत्रता किसी भी शासन प्रणाली की सबसे बड़ी शक्ति है। आधुनिक लोकतंत्र में संवैधानिक संस्थाएँ, स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र मीडिया एवं शक्तियों का विभाजन निरंकुशता को रोकने का कार्य करते हैं।

दोनों व्यवस्थाओं के उद्देश्यों में भी अंतर दिखाई देता है। प्लेटो का आदर्श राज्य मुख्यतः नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर केंद्रित था। उनका उद्देश्य ऐसा समाज स्थापित करना था जिसमें नागरिक सदाचारी एवं न्यायप्रिय बन सकें। समकालीन लोकतंत्र का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्थिरता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, मानवाधिकारों की रक्षा एवं नागरिक स्वतंत्रताओं की सुरक्षा भी है। आधुनिक लोकतंत्र कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अपनाते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास करता है। इसके बावजूद प्लेटो के अनेक विचार आज भी समकालीन लोकतंत्र में प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। नैतिक नेतृत्व, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुशासन, योग्य प्रशासन एवं सार्वजनिक जीवन में नैतिकता जैसे तत्व आज भी लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक माने जाते हैं। वर्तमान समय में राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार, अवसरवाद, धनबल एवं जनमत के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाओं को आंशिक रूप से सही सिद्ध करती हैं। इसी कारण आधुनिक लोकतंत्र में भी राजनीतिक नेतृत्व की गुणवत्ता एवं नैतिक उत्तरदायित्व पर विशेष बल दिया जा रहा है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

समकालीन लोकतंत्र प्लेटो की व्यवस्था की तुलना में अधिक समावेशी एवं मानवाधिकार आधारित प्रणाली है। यह नागरिक स्वतंत्रता, समानता एवं जनसहभागिता को सर्वोच्च महत्व देता है। दूसरी ओर प्लेटो का आदर्श राज्य अनुशासन, नैतिकता एवं बौद्धिक श्रेष्ठता पर आधारित था। दोनों व्यवस्थाएँ अलग–अलग ऐतिहासिक एवं सामाजिक परिस्थितियों की उपज हैं, किंतु दोनों का अध्ययन राजनीतिक दर्शन को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार प्लेटो के आदर्श राज्य और समकालीन लोकतंत्र के मध्य गहरे वैचारिक अंतर होने के बावजूद दोनों व्यवस्थाओं का अंतिम उद्देश्य समाज में व्यवस्था, न्याय एवं कल्याण स्थापित करना है। प्लेटो का आदर्श राज्य आधुनिक लोकतंत्र का प्रत्यक्ष विकल्प नहीं माना जा सकता, किंतु उनके विचार लोकतांत्रिक शासन की कमजोरियों को समझने एवं उसे अधिक नैतिक, उत्तरदायी एवं प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्लेटो का राजनीतिक दर्शन प्राचीन यूनानी चिंतन की देन होने के बावजूद आज भी समकालीन लोकतंत्र के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है। यद्यपि प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे तथा उन्होंने दार्शनिक राजा के नेतृत्व में आदर्श राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की, फिर भी उनके अनेक विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की गुणवत्ता, नैतिकता एवं उत्तरदायित्व को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में लोकतंत्र अनेक चुनौतियों जैसे राजनीतिक भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, जनमत का दुरुपयोग, अयोग्य नेतृत्व, राजनीतिक अवसरवाद एवं सामाजिक असमानता का सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में प्लेटो के विचार लोकतांत्रिक शासन की कमजोरियों को पहचानने एवं उन्हें सुधारने के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

प्लेटो ने शासन में नैतिकता एवं ज्ञान को सर्वोच्च स्थान दिया। उनके अनुसार राज्य का संचालन ऐसे व्यक्तियों के हाथों में होना चाहिए जो विवेकशील, शिक्षित एवं नैतिक हों। समकालीन लोकतंत्र में यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि आधुनिक राजनीति में अनेक बार नेतृत्व केवल लोकप्रियता, धनबल अथवा चुनावी रणनीतियों के आधार पर उभरता है, जबकि शासन संचालन के लिए दूरदृष्टि, नैतिक उत्तरदायित्व एवं प्रशासनिक क्षमता की आवश्यकता होती है। लोकतांत्रिक देशों में बढ़ते भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग एवं राजनीतिक अपराधीकरण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल चुनाव जीतना किसी व्यक्ति को आदर्श शासक नहीं बना सकता। प्लेटो का दार्शनिक राजा का सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि नेतृत्व में नैतिकता एवं बौद्धिक योग्यता का होना अत्यंत आवश्यक है। समकालीन लोकतंत्र में शिक्षा की भूमिका भी प्लेटो की विचारधारा को प्रासंगिक बनाती है। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास का साधन है। आज लोकतंत्र की सफलता काफी हद तक जागरूक एवं शिक्षित नागरिकों पर निर्भर करती है। यदि नागरिक राजनीतिक रूप से जागरूक नहीं होंगे तो वे भावनात्मक प्रचार, फेक न्यूज़, जातीय एवं धार्मिक ध्रुवीकरण तथा जनभावनाओं के दुरुपयोग का शिकार हो सकते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में नागरिक शिक्षा, संवैधानिक मूल्यों एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की आवश्यकता प्लेटो की शिक्षा संबंधी अवधारणा की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है।

प्लेटो ने लोकतंत्र की जिस कमजोरी की ओर संकेत किया था, वह आज भी कई रूपों में दिखाई देती है। उन्होंने कहा था कि लोकतंत्र में लोकप्रियता योग्य नेतृत्व पर भारी पड़ सकती है तथा लोग भावनात्मक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

निर्णय लेकर अयोग्य व्यक्तियों को सत्ता सौंप सकते हैं। समकालीन लोकतंत्रों में कई बार चुनावी राजनीति जनकल्याण की अपेक्षा प्रचार, व्यक्तिवाद एवं जनभावनाओं को प्रभावित करने की रणनीतियों पर आधारित दिखाई देती है। सोशल मीडिया एवं डिजिटल प्रचार के युग में जनमत को प्रभावित करना पहले की तुलना में अधिक आसान हो गया है। फेक न्यूज़, दुष्प्रचार एवं राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी समस्याएँ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रही हैं। इस संदर्भ में प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाएँ आज भी महत्वपूर्ण प्रतीत होती हैं।

प्लेटो ने राज्य को एक नैतिक संस्था माना था जिसका उद्देश्य नागरिकों के जीवन को श्रेष्ठ एवं न्यायपूर्ण बनाना है। समकालीन लोकतंत्र भी केवल राजनीतिक सत्ता तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, कल्याणकारी योजनाओं एवं समान अवसरों की स्थापना का प्रयास करता है। आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास करते हैं। यह विचार प्लेटो की उस धारणा से मेल खाता है जिसमें राज्य को केवल प्रशासनिक संस्था न मानकर नैतिक एवं सामाजिक विकास का साधन माना गया है। समकालीन लोकतंत्र में सुशासन की अवधारणा भी प्लेटो की प्रासंगिकता को बढ़ाती है। प्लेटो का मानना था कि शासन में योग्यता एवं दक्षता आवश्यक है। आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्थाओं में भी विशेषज्ञता, तकनीकी ज्ञान एवं प्रशिक्षण को विशेष महत्व दिया जाता है। लोकतांत्रिक शासन में नीतियों का निर्माण एवं क्रियान्वयन केवल राजनीतिक इच्छा शक्ति से संभव नहीं होता, बल्कि उसके लिए प्रशिक्षित एवं योग्य प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता होती है। इस प्रकार प्लेटो का ज्ञान एवं योग्यता आधारित शासन का सिद्धांत आज भी प्रशासनिक दक्षता एवं सुशासन के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाता है। प्लेटो ने सामाजिक संतुलन एवं सामूहिक हित को व्यक्तिगत हित से ऊपर रखा। आज के लोकतांत्रिक समाजों में भी सामाजिक समरसता एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता महसूस की जाती है। बढ़ती आर्थिक असमानता, सामाजिक विभाजन एवं उपभोक्तावाद ने समाज में प्रतिस्पर्धा एवं स्वार्थ की भावना को बढ़ाया है। ऐसे समय में प्लेटो का यह विचार कि राज्य का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण एवं नैतिक जीवन की स्थापना है, अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। हालाँकि समकालीन लोकतंत्र में प्लेटो के सभी विचारों को स्वीकार नहीं किया जा सकता। उनका अभिजनवादी दृष्टिकोण आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है क्योंकि लोकतंत्र समानता एवं जनसत्ता पर आधारित है। प्लेटो ने शासन का अधिकार केवल दार्शनिक एवं शिक्षित वर्ग तक सीमित किया, जबकि आधुनिक लोकतंत्र प्रत्येक नागरिक को राजनीतिक अधिकार एवं सहभागिता प्रदान करता है। इसी प्रकार प्लेटो द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर लगाए गए नियंत्रण आधुनिक मानवाधिकार संबंधी सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इसलिए समकालीन लोकतंत्र प्लेटो के विचारों को पूर्णतः स्वीकार नहीं करता, बल्कि उनमें निहित नैतिक एवं दार्शनिक तत्वों को अधिक महत्व देता है।

वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में लोकतंत्र निरंतर नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजनीतिक ध्रुवीकरण, जनमत का व्यावसायीकरण, कॉर्पोरेट प्रभाव, चुनावी भ्रष्टाचार एवं डिजिटल प्रचार ने लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रभावित किया है। ऐसे समय में प्लेटो का यह आग्रह कि शासन ज्ञान, विवेक एवं नैतिकता पर आधारित होना चाहिए, अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। आधुनिक लोकतंत्रों में भी नेतृत्व की गुणवत्ता,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता, पारदर्शिता एवं जवाबदेही पर बल दिया जा रहा है, जो प्लेटो की राजनीतिक विचारधारा से साम्य रखता है।

समकालीन लोकतंत्र में प्लेटो की प्रासंगिकता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने राजनीति को नैतिकता से जोड़ने का प्रयास किया। आज जब राजनीति को कई बार केवल सत्ता प्राप्ति का साधन मान लिया जाता है, तब प्लेटो का यह विचार कि राज्य का उद्देश्य नागरिकों के नैतिक एवं बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करना है, लोकतंत्र को अधिक मानवीय एवं उत्तरदायी बनाने की प्रेरणा देता है। प्लेटो की विचारधारा यह संकेत करती है कि लोकतंत्र की सफलता केवल चुनावी प्रक्रिया पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके लिए नैतिक नेतृत्व, जागरूक नागरिक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था भी आवश्यक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यद्यपि प्लेटो का आदर्श राज्य आधुनिक लोकतंत्र से भिन्न था, फिर भी उनके अनेक विचार आज भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की गुणवत्ता एवं नैतिकता को समझने में अत्यंत उपयोगी हैं। प्लेटो की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने शासन को केवल शक्ति का साधन न मानकर ज्ञान, न्याय एवं नैतिकता की व्यवस्था के रूप में देखा। यही कारण है कि उनका राजनीतिक दर्शन आज भी समकालीन लोकतंत्र के अध्ययन एवं मूल्यांकन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है। भारतीय लोकतंत्र संविधान, समानता एवं न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। फिर भी भारतीय राजनीति में नैतिक नेतृत्व, राजनीतिक शिक्षा एवं सुशासन की आवश्यकता निरंतर महसूस की जाती है।

प्लेटो के विचार भारतीय संदर्भ में निम्न रूपों में प्रासंगिक हैं– वैश्वीकरण के युग में लोकतंत्र नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। आर्थिक असमानता, राजनीतिक ध्रुवीकरण, फेक न्यूज़ तथा जनमत के दुरुपयोग जैसी समस्याएँ लोकतंत्र को प्रभावित कर रही हैं। प्लेटो द्वारा लोकतंत्र की आलोचना आज भी कई संदर्भों में प्रासंगिक प्रतीत होती है। सोशल मीडिया एवं जनभावनाओं पर आधारित राजनीति ने लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। कई बार लोकप्रियता योग्य नेतृत्व पर भारी पड़ती है। यह स्थिति प्लेटो की उस आशंका को पुष्ट करती है जिसमें उन्होंने लोकतंत्र को भीड़तंत्र में बदलने का खतरा बताया था।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study)– प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा राजनीतिक दर्शन की आधारभूत अवधारणाओं में से एक है, इसलिए उसका समकालीन लोकतंत्र के संदर्भ में अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ भ्रष्टाचार, राजनीतिक अवसरवाद, नैतिक पतन एवं जनमत के दुरुपयोग जैसी समस्याओं का सामना कर रही हैं, जिनके समाधान हेतु प्लेटो के विचार उपयोगी हो सकते हैं। आधुनिक राजनीति में नैतिक नेतृत्व एवं सुशासन की आवश्यकता बढ़ती जा रही है, जबकि प्लेटो ने ज्ञान एवं नैतिकता आधारित शासन पर बल दिया था। लोकतंत्र की कमजोरियों एवं चुनौतियों को समझने के लिए प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाओं का अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षा, नागरिक चेतना एवं राजनीतिक जागरूकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, जिसे प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में विशेष महत्व दिया था। प्राचीन राजनीतिक चिंतन एवं आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी है।

यह अध्ययन समकालीन लोकतंत्र की गुणवत्ता, नैतिकता एवं उत्तरदायित्व को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या–

1 समकालीन लोकतंत्र में बढ़ता राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं नैतिक पतन लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर कर रहा है।

2 लोकतंत्र में कई बार योग्य नेतृत्व की अपेक्षा लोकप्रियता एवं भावनात्मक राजनीति को अधिक महत्व दिया जाता है।

3 जनमत निर्माण में सोशल मीडिया, दुष्प्रचार एवं फेक न्यूज़ का प्रभाव लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रहा है।

4 प्लेटो ने लोकतंत्र को भीड़तंत्र एवं अराजकता की ओर ले जाने वाली व्यवस्था माना था; वर्तमान परिस्थितियाँ इस आलोचना को आंशिक रूप से प्रासंगिक बनाती हैं।

5 आधुनिक लोकतंत्र समानता एवं स्वतंत्रता पर आधारित है, जबकि प्लेटो का आदर्श राज्य अभिजनवादी एवं वर्ग आधारित व्यवस्था थी; इसलिए दोनों व्यवस्थाओं के मध्य वैचारिक विरोधाभास विद्यमान है।

6 समकालीन राजनीति में नैतिकता एवं सार्वजनिक उत्तरदायित्व का संकट गहराता जा रहा है, जिसे प्लेटो के दार्शनिक राजा की अवधारणा के माध्यम से समझा जा सकता है।

7 यह समस्या भी महत्वपूर्ण है कि क्या प्लेटो के विचार आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में व्यावहारिक रूप से उपयोगी हो सकते हैं अथवा नहीं।

1.3 अध्ययन का औचित्य–

1 प्लेटो के राजनीतिक दर्शन का अध्ययन आधुनिक राजनीतिक चिंतन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए आवश्यक है।

2 यह अध्ययन लोकतंत्र की शक्तियों एवं कमजोरियों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

3 अध्ययन नैतिक नेतृत्व एवं सुशासन की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

4 प्लेटो के विचारों के माध्यम से आधुनिक लोकतंत्र की चुनौतियों का दार्शनिक विश्लेषण किया जा सकता है।

5 यह अध्ययन राजनीतिक दर्शन एवं समकालीन राजनीति के मध्य संबंध स्थापित करने में सहायक है।

6 लोकतंत्र की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु शिक्षा, नैतिकता एवं उत्तरदायित्व के महत्व को समझने के लिए यह अध्ययन उपयोगी है।

7 यह शोध राजनीतिक विज्ञान के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं अध्यापकों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य–

1 प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा का विश्लेषण करना।

2 दार्शनिक राजा की अवधारणा एवं उसकी विशेषताओं का अध्ययन करना।

3 प्लेटो के लोकतंत्र संबंधी विचारों एवं आलोचनाओं को समझना।

4 समकालीन लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।

5 प्लेटो के आदर्श राज्य एवं आधुनिक लोकतंत्र के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करना।

6 समकालीन लोकतंत्र में प्लेटो के विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

7 लोकतंत्र में नैतिक नेतृत्व, शिक्षा एवं सुशासन के महत्व का विश्लेषण करना।
8 आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था की समस्याओं के संदर्भ में प्लेटो के विचारों की उपयोगिता को स्पष्ट करना।

1.5 शोध–प्रश्न–

1 प्लेटो के आदर्श राज्य की मूल अवधारणा क्या है?
2 प्लेटो ने दार्शनिक राजा को शासन के लिए सर्वोत्तम क्यों माना?
3 प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक क्यों थे?
4 समकालीन लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
5 प्लेटो के आदर्श राज्य एवं आधुनिक लोकतंत्र में क्या समानताएँ एवं भिन्नताएँ हैं?
6 क्या प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं?
7 समकालीन लोकतंत्र में नैतिक नेतृत्व एवं शिक्षा की क्या भूमिका है?
8 वर्तमान लोकतांत्रिक चुनौतियों के समाधान में प्लेटो के विचार किस सीमा तक उपयोगी हो सकते हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ–

1 यह अध्ययन मुख्यतः प्लेटो के राजनीतिक दर्शन एवं उनके आदर्श राज्य की अवधारणा तक सीमित है।
2 अध्ययन में प्लेटो की कृति जैम त्मचनइसपब को प्रमुख आधार बनाया गया है।
3 समकालीन लोकतंत्र का अध्ययन मुख्यतः आधुनिक प्रतिनिधिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में किया गया है।
4 यह शोध सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक स्वरूप का है; इसमें क्षेत्रीय सर्वेक्षण अथवा सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग नहीं किया गया है।
5 अध्ययन में प्लेटो के राजनीतिक विचारों की तुलना आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों से की गई है, किंतु सभी लोकतांत्रिक देशों का विस्तृत तुलनात्मक विश्लेषण शामिल नहीं है।
6 शोध का केंद्र राजनीतिक दर्शन एवं लोकतांत्रिक सिद्धांत हैं; आर्थिक एवं प्रशासनिक पहलुओं का सीमित विश्लेषण किया गया है।
7 प्राचीन यूनानी समाज एवं आधुनिक वैश्विक लोकतंत्र की परिस्थितियों में व्यापक अंतर होने के कारण प्रत्यक्ष तुलना की कुछ सीमाएँ विद्यमान हैं।
8 अध्ययन मुख्यतः उपलब्ध पुस्तकों, शोधपत्रों एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

1.7 परिकल्पना–

1 प्लेटो का आदर्श राज्य नैतिकता, ज्ञान एवं न्याय आधारित शासन व्यवस्था की अवधारणा प्रस्तुत करता है।
2 समकालीन लोकतंत्र में उत्पन्न राजनीतिक एवं नैतिक संकट प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाओं को आंशिक रूप से प्रासंगिक सिद्ध करते हैं।
3 लोकतांत्रिक शासन की सफलता के लिए शिक्षित एवं नैतिक नेतृत्व आवश्यक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

4 प्लेटो की दार्शनिक राजा की अवधारणा आधुनिक लोकतंत्र में प्रत्यक्ष रूप से लागू नहीं की जा सकती, किंतु उसका नैतिक पक्ष आज भी उपयोगी है।
5 समकालीन लोकतंत्र में सुशासन, उत्तरदायित्व एवं नागरिक शिक्षा की आवश्यकता प्लेटो के विचारों से साम्य रखती है।
6 प्लेटो के राजनीतिक दर्शन का अध्ययन आधुनिक लोकतंत्र की कमजोरियों एवं संभावनाओं को समझने में सहायक सिद्ध होता है।
7 लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती के लिए नैतिक मूल्यों एवं राजनीतिक चेतना का विकास आवश्यक है।

1.8 शोध प्राविधि–

1 प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।
2 अध्ययन मुख्यतः दार्शनिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।
3 शोध में ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करते हुए प्लेटो के राजनीतिक चिंतन की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है।
4 तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से प्लेटो के आदर्श राज्य एवं समकालीन लोकतंत्र का विश्लेषण किया गया है।
5 अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है।
6 शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।
7 शोध का स्वरूप सैद्धांतिक एवं व्याख्यात्मक है।

1.9 तथ्य–संकलन के स्रोत–

1 प्लेटो की मूल कृतियाँ, विशेषकर जेम त्मचनइसपब, प्राथमिक स्रोत के रूप में उपयोग की गई हैं।
2 Aristotle तथा अन्य यूनानी दार्शनिकों की कृतियों का संदर्भ लिया गया है।
3 राजनीतिक दर्शन एवं लोकतंत्र से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।
4 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों का उपयोग किया गया है।
5 विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रकाशित संदर्भ सामग्री का उपयोग किया गया है।
6 लोकतंत्र एवं राजनीतिक सिद्धांत से संबंधित विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों एवं ई–सामग्री का अध्ययन किया गया है।
7 विभिन्न विद्वानों की आलोचनात्मक व्याख्याओं एवं टिप्पणियों को संदर्भ के रूप में शामिल किया गया है।

1.10 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)–

प्लेटो की कृति The Republic में आदर्श राज्य, न्याय एवं दार्शनिक राजा की अवधारणा का विस्तृत वर्णन मिलता है।

Aristotle ने अपनी कृति Politics में प्लेटो के आदर्श राज्य की आलोचना करते हुए उसे अत्यधिक आदर्शवादी एवं अव्यावहारिक बताया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

George H- Sabine ने अपनी पुस्तक A History of Political Theory में प्लेटो को पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का आधार स्तंभ माना है।

Ernest Barker ने यूनानी राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करते हुए प्लेटो के राज्य सिद्धांत को नैतिकता आधारित राजनीतिक व्यवस्था बताया है।

Karl Popper ने The Open Society and Its Enemies में प्लेटो की आलोचना करते हुए उन्हें बंद समाज एवं निरंकुश प्रवृत्तियों का समर्थक बताया।

Andrew Heywood ने आधुनिक लोकतंत्र की विशेषताओं का वर्णन करते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों एवं नागरिक स्वतंत्रताओं को प्रमुख आधार माना है।

O-P- Gauba एवं J-C- Johari जैसे भारतीय विद्वानों ने प्लेटो के आदर्श राज्य एवं आधुनिक लोकतंत्र के तुलनात्मक अध्ययन को राजनीतिक विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण माना है।

समकालीन शोधों में प्लेटो के विचारों को नैतिक नेतृत्व, सुशासन एवं राजनीतिक शिक्षा के संदर्भ में पुनः प्रासंगिक माना जा रहा है।

वर्तमान साहित्य यह संकेत करता है कि प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाएँ आज के राजनीतिक ध्रुवीकरण, जनमत के दुरुपयोग एवं नेतृत्व संकट के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो गई हैं।

1.11 डेटा विश्लेषण– अध्ययन में उपलब्ध साहित्य एवं संदर्भ स्रोतों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया।

प्लेटो के आदर्श राज्य की प्रमुख अवधारणाओं, न्याय, दार्शनिक राजा, शिक्षा एवं नैतिकता, का विश्लेषण किया गया।

समकालीन लोकतंत्र की प्रमुख विशेषताओं, समानता, स्वतंत्रता, जनसत्ता एवं मानवाधिकार, का अध्ययन किया गया।

दोनों व्यवस्थाओं के मध्य समानताओं एवं भिन्नताओं की पहचान की गई।

प्लेटो की लोकतंत्र संबंधी आलोचनाओं का आधुनिक राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में मूल्यांकन किया गया।

लोकतंत्र में नैतिक नेतृत्व एवं नागरिक शिक्षा की आवश्यकता का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि प्लेटो के अनेक विचार आज भी लोकतांत्रिक शासन की गुणवत्ता को समझने में उपयोगी हैं।

1.12 चर्चा (Discussion)– प्लेटो का आदर्श राज्य नैतिकता एवं ज्ञान आधारित शासन व्यवस्था का समर्थन करता है, जबकि समकालीन लोकतंत्र जनसत्ता एवं राजनीतिक समानता पर आधारित है।

प्लेटो ने लोकतंत्र की जिन कमजोरियों जैसे भीड़तंत्र, अयोग्य नेतृत्व एवं जनभावनाओं के दुरुपयोग की ओर संकेत किया था, वे आज भी अनेक लोकतांत्रिक देशों में दिखाई देती हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

आधुनिक लोकतंत्र में नागरिक स्वतंत्रता एवं मानवाधिकारों को विशेष महत्व दिया जाता है, जबकि प्लेटो ने सामाजिक अनुशासन एवं सामूहिक हित को प्राथमिकता दी।

चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि प्लेटो की दार्शनिक राजा की अवधारणा प्रत्यक्ष रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप नहीं है, किंतु उसका नैतिक एवं बौद्धिक पक्ष आज भी प्रासंगिक है।

समकालीन लोकतंत्र में शिक्षा एवं राजनीतिक जागरूकता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, जो प्लेटो की शिक्षा संबंधी अवधारणा से मेल खाती है।

वर्तमान लोकतंत्र में बढ़ते राजनीतिक भ्रष्टाचार एवं नैतिक पतन ने प्लेटो के नैतिक नेतृत्व संबंधी विचारों को पुनः प्रासंगिक बना दिया है।

चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिक लोकतंत्र प्लेटो के आदर्श राज्य की तुलना में अधिक समावेशी एवं अधिकार आधारित व्यवस्था है।

1.13 परिणाम (Findings)–

प्लेटो का आदर्श राज्य न्याय, नैतिकता एवं ज्ञान आधारित शासन व्यवस्था पर आधारित था।

प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे क्योंकि उनके अनुसार लोकतंत्र अयोग्य नेतृत्व एवं अराजकता को जन्म दे सकता है।

समकालीन लोकतंत्र नागरिक स्वतंत्रता, समानता एवं जनसत्ता को सर्वोच्च महत्व देता है।

प्लेटो के अनेक विचारकृजैसे नैतिक नेतृत्व, शिक्षा एवं सुशासन आज भी लोकतांत्रिक शासन के लिए प्रासंगिक हैं।

आधुनिक लोकतंत्र में राजनीतिक भ्रष्टाचार, जनमत के दुरुपयोग एवं नेतृत्व संकट जैसी समस्याएँ प्लेटो की आलोचनाओं को आंशिक रूप से सही सिद्ध करती हैं।

प्लेटो की दार्शनिक राजा की अवधारणा आधुनिक लोकतंत्र में प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार्य नहीं है, किंतु उसके नैतिक तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि लोकतंत्र की सफलता के लिए केवल चुनावी प्रक्रिया पर्याप्त नहीं है, बल्कि नैतिक नेतृत्व, जागरूक नागरिक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी आवश्यक हैं।

प्लेटो का राजनीतिक दर्शन आज भी समकालीन लोकतंत्र के अध्ययन एवं मूल्यांकन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

निष्कर्ष– प्लेटो का आदर्श राज्य राजनीतिक दर्शन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। प्लेटो ने न्याय, नैतिकता, शिक्षा एवं ज्ञान आधारित शासन की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए आदर्श राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना की। यद्यपि उनकी अवधारणा पूर्णतः आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है, फिर भी उनके अनेक विचार आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं। समकालीन लोकतंत्र जनता की संप्रभुता, स्वतंत्रता एवं समानता पर आधारित है। प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे, परंतु उनकी आलोचनाएँ लोकतंत्र की कमजोरियों को समझने में सहायक सिद्ध होती हैं। आज जब लोकतंत्र जनभावनाओं, राजनीतिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

ध्रुवीकरण एवं नैतिक संकट जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब प्लेटो के नैतिक नेतृत्व एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संबंधी विचार अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्लेटो का आदर्श राज्य आधुनिक लोकतंत्र का विकल्प नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता एवं नैतिकता को समझने का एक दार्शनिक आधार प्रदान करता है। समकालीन लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी, नैतिक एवं प्रभावी बनाने हेतु प्लेटो के विचारों से प्रेरणा ली जा सकती है।

संदर्भ सूची (References)-

1. The Republic, Penguin Classics, 2007.
2. IysVks, Laws, Oxford University Press, 2008.
3. Aristotle, Politics, Oxford University Press, 1995.
4. Sabine, George H., A History of Political Theory, Oxford & IBH, 1973.
5. Ebenstein, William, Great Political Thinkers, CBS Publishers, 2000.
6. Barker, Ernest, Greek Political Theory, Methuen Publication, 1960.
7. Wayper, C.L., Political Thought, English Language Book Society, 1980.
8. Gettell, Raymond G., History of Political Thought, Surjeet Publications, 1996.
9. Mukherjee, Subrata & Ramaswamy, Sushila, A History of Political Thought, PHI Learning, 2011.
10. Appadorai, A., The Substance of Politics, Oxford University Press, 2001.
11. Popper, Karl, The Open Society and Its Enemies, Routledge, 1945.
12. Laski, Harold J., Grammar of Politics, George Allen & Unwin, 1951.
13. Johari, J.C., Principles of Modern Political Science, Sterling Publishers, 2009.
14. Gauba, O.P., An Introduction to Political Theory, Macmillan India, 2012.
15. Ashirvatham, Eddy & Misra, K.K., Political Theory, S. Chand, 2004.
16. Jean-Jacques Rousseau, The Social Contract, Penguin Books, 1968.
17. John Locke, Two Treatises of Government, Cambridge University Press, 1988.
18. Thomas Hobbes, Leviathan, Penguin Classics, 1985.
19. John Stuart Mill, On Liberty, Oxford University Press, 1991.
20. Heywood, Andrew, Political Theory, Palgrave Macmillan, 2015.
21. Mahajan, Vidya Dhar, Political Theory, S. Chand Publications, 2013.